53

किसी विकल्प को न मानें

बाइबल पाठ #21

VI. तीसरे फसह से यीशु के बैतनिय्याह में आने तक (क्रमशः)।
- ड. यरूशलेम में: झोंपड़ियों का पर्व (क्रमशः)।
  - 3. पर्व के बाद: अतिरिक्त शिक्षा (क्रमशः)।
    - ख. ज्योति और अंधकार पर शिक्षा (यूहन्ना 8:12–59)।
    - ग. शारीरिक और आत्मिक अंधकार पर शिक्षा (यूहन्ना 9:1–41)।
    - घ. अच्छे चरवाहे और मज़दूरों पर शिक्षा (यूहन्ना 10:1–21)।

परिचय

पिछले पाठ में, यीशु और उसके चेले डेरों का पर्व मनाने के लिए यरूशलेम में पहुंचे थे। पर्व के बाद यीशु उपदेश देने के लिए कुछ और दिन वहां रुक गया। पाठ व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री की प्रसिद्ध घटना के साथ समाप्त हुआ था। यह पाठ वहीं से आरम्भ होगा, जहां पिछला खत्म हुआ था।

इस पाठ की घटनाएं केवल यूहन्ना द्वारा ही लिखी गई थीं। सब कुछ यरूशलेम में या इसके निकट ही हुआ (यूहन्ना 8:20, 59; 9:7) और सम्भवतया मण्डपों या डेरों के पर्व के तुरन्त बाद ही हुआ।[1]

हमारा बाइबल पाठ यीशु और यरूशलेम के धार्मिक अगुओं में होने वाले विवाद पर केन्द्रित है। उसने अगुओं से कहा, "*तुम्हारे विषय में* मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है" (यूहन्ना 8:26)। इसके बाद, अपने आप को प्रकट करने के अलावा, उसने अपने शत्रुओं को लोगों के सामने लाना था। पवित्र शास्त्र के इस भाग में, उसने अपने और उनके बीच में स्पष्ट और अस्पष्ट कई तुलनाएं कीं:

उसके शत्रु	मसीह
अंधकार में (8:12)	जगत की ज्योति (8:12)
शरीर के अनुसार न्याय (8:15)	सच्चा न्याय (8:16)
नीचे के (8:23)	ऊपर का (8:23)

मसीह अपने बारे में दृढ़ता से दावे कर रहा था। सात ''मैं हूं'' में से तीन कथन इस अध्ययन के लिए बाइबल पाठ में यूहन्ना द्वारा[2] लिखे गए हैं। यीशु ने कहा, ''जगत की ज्योति *मैं हूं*; '' (यूहन्ना 8:12; 9:5) और ''अच्छा चरवाहा *मैं हूं*। ''[3] परन्तु उसका सबसे स्पष्ट वाक्य यह था, जब उसने कहा, ''मैं तुम से सच-सच कहता हूं; कि पहले इसके अब्राहम उत्पन्न हुआ *मैं हूं* '' (8:58)। यह एक दावा था कि वह अब्राहम के होने से पहले से था, परन्तु यह इससे भी बढ़कर था: यह परमेश्वर होने का दावा था।

यीशु और उस समय के कथित आध्यात्मिक अगुओं में अन्तर से इस पाठ का शीर्षक मिला। जब कोई चीज़ बहुत बिकने लगती है, तो बाज़ार में उससे मिलती-जुलती बनावटी चीज़ें आ जाती हैं, जो आम तौर पर घटिया होती हैं। ऐसा होने पर उस मूल वस्तु के निर्माता कई बार अपने विज्ञापन के साथ ये शब्द जोड़ देते हैं: ''नकलचियों से सावधान।'' आज बहुत से लोगों ने संसार की एकमात्र आशा के रूप में मसीह को नकार दिया है और उसके कई विकल्प सुझाए हैं। हमारे अध्ययन में ज़ोर इसी बात पर दिया जाएगा कि ''प्रभु के किसी विकल्प को न मानें!''

किसी और ज्योति को न मानें (यूहन्ना 8:12-59)

हमारे पाठ के आरम्भ में, यीशु मन्दिर में ''भण्डार में'' (आयत 20) कहीं उपदेश दे रहा था (आयतें 20, 59)। भण्डार स्त्रियों के आंगन में था,[4] जिसमें तुरही के आकार के तेरह दानपात्र रखे हुए थे (देखें मरकुस 12:41, 43; लूका 21:1)। यह उस बड़े हॉल से जहां महासभा एकत्र होती थी, अधिक दूर नहीं था।

पिछले पाठ में, मसीह ने ''जीवन का जल'' देने की पेशकश की थी, जो मण्डपों के पर्व के पानी की रीति से जुड़ा एक रूपक था। उसने अब यह घोषणा की कि वह ''जगत की ज्योति'' है, सांकेतिक तौर पर शायद यह पर्व के दौरान स्त्रियों के आंगन में लटकाए जाने वाले शमादान का रूपक था।[5] ''तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अंधकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा'' (आयत 12)। एच. आई. हेस्टर ने टिप्पणी की है, ''कितना अद्‌भुत दावा है क्योंकि या तो यह सच्चा है या किसी मनुष्य द्वारा कहा गया सबसे दम्भी कथन।''[6]

मसीह की स्पष्ट बातों से यहूदी अधिकारियों में बहस छिड़ गई, जो अध्याय के अन्त तक जारी रहती है। यह बहस अध्याय 7 के विवाद के बाद की है और अध्याय 5 के विवाद से मिलती-जुलती है। इस अध्याय में कई बड़े विषय दिए गए हैं, स्थान की कमी के कारण

चर्चा को इधर-उधर घुमाना असम्भव होगा। इसलिए हमें मुख्य बातों की ओर ध्यान करना होगा।

सच्चाई की रोशनी

यहूदी अगुओं ने यीशु को चुनौती दी, ''तू कौन है ?''; ''... तू अपने आपको क्या ठहराता है ?'' (8:25क, 53ख)। आज हम किसी से पूछ सकते हैं, ''तुम्हें क्या लगता है कि तुम कौन हो ?''[7] मसीह ने उन्हें यह बताने में कि वह कौन है और उसका उद्देश्य क्या है, कोई हिचकिचाहट नहीं की। हम पहले ही यीशु के कथन पर कि वह जगत की ज्योति था, चर्चा कर चुके हैं (आयत 12)। इसके अलावा, उसने घोषणा की कि ...

... उसकी बातें सच्ची थीं (आयतें 14, 16)।
... वह ऊपर का था (आयत 23)।
... उसे परमेश्वर की ओर से भेजा गया था[8] (आयत 26)।
... वह वही बोलता था, जो परमेश्वर ने उसे सिखाया था (आयतें 26, 28)।
... वह वही काम करता था, जो परमेश्वर को भाता था (आयत 29)।

इस दावे के बारे में कि वह केवल वही काम करता था, जो परमेश्वर को पसन्द था, मुझे आयत 46 में उसकी चुनौती पर ध्यान दिलाना होगा: ''तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है ?'' NIV का अनुवाद है, ''क्या तुम में से कोई मुझे पाप का दोषी साबित कर सकता है ?'' यदि मैं और आप ऐसा प्रश्न पूछते, तो हमें जानने वालों को केवल एक मिनट लगता, जिसमें वे हमारे सब पापों की लम्बी-चौड़ी लिस्ट बना डालते। परन्तु यीशु को कोई दोषी न ठहरा सका,[9] क्योंकि वह ''निष्पाप'' था (इब्रानियों 4:15)।

यूहन्ना 8:25 में ''तू कौन है ?'' प्रश्न के उत्तर में यीशु ने यूं कहा होगा:

- ''वही जिसे तुम मारने की कोशिश कर रहे हो'' (आयतें 37, 40)।
- ''वही जिसे तुम ऊंचे पर उठाओगे'' (क्रूस पर अपनी मृत्यु की बात करते हुए) (आयत 28; देखें यूहन्ना 3:14; 12:32)।
- ''वही जो स्वर्ग में जाऊंगा'' (अपने स्वर्गारोहण की बात करते हुए; 8:21)।
- ''वही जिसमें तुम्हें उद्धार पाने के लिए विश्वास करना आवश्यक होगा'' (आयतें 24,[10] 30, 46)।

आयत 30 कहती है, ''वह ये बातें कह ही रहा था, कि बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया।'' आश्चर्य की बात है कि उनमें, जिन्होंने ''उस पर विश्वास किया'' कुछ यहूदी धर्मतन्त्र के लोग भी थे (आयत 31;[11] यूहन्ना 9:16 की ओर आगे देखें)।[12] इनमें से एक निकुदेमुस था (यूहन्ना 7:50); एक और अरमित्तियाह का यूसुफ था (मरकुस 15:43;

लूका 23:50, 51; यूहन्ना 19:38); और भी होंगे (देखें यूहन्ना 12:42)।

मसीह ने ज़ोर दिया कि उसमें विश्वास मन में ही नहीं होना था, बल्कि इसे दिखाया जाना भी आवश्यक था। ''तब यीशु ने उन यहूदियों से, जिन्होंने उसकी प्रतीति की थी, कहा, *यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे,* तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे'' (आयत 31)। फिर, उसने कहा, ''... *यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा,* तो वह अनन्तकाल तक मृत्यु न देखेगा'' (आयत 51)। केवल विश्वास ही काफ़ी नहीं है।

गलती का अन्धेरा

कुछ यहूदी अगुवे मसीह से प्रभावित हुए थे, पर अधिकतर नहीं। अधिकतर का यही विश्वास था कि अब रोशनी उसके पास नहीं, बल्कि रोशनी और समझ उन्हीं से मिलती थी। यीशु ने यह कहकर कि उनमें ज्ञान (आयत 14) और समझ (आयत 43) दोनों की कमी है, उन्हें और क्रोधित कर दिया। इस अध्याय में कई उदाहरण हैं, जिनसे उनकी नासमझी का पता चलता है:

जब मसीह ने अपने पिता की बात की (आयत 18), तो उन्हें यह समझ नहीं आई कि वह अपने स्वर्गीय पिता की बात कर रहा था (आयत 19; आयत 27 भी देखें)।

जब यीशु ने कहा कि वह जाएगा और जहां वह जा रहा है, जहां वे नहीं जा सकते (आयत 21), तो उन्हें यह समझ नहीं आया कि वह स्वर्ग में जाने की बात कर रहा था। उन्होंने अनुमान लगाया कि वह आत्महत्या करने की बात कर रहा होगा (आयत 22)।

जब प्रभु ने यह घोषणा की कि सच्चाई उन्हें स्वतन्त्र करेगी (आयत 32[13]) तो उन्होंने इसे राजनीतिक स्वतन्त्रता समझा और कहा, ''हम तो इब्राहीम के वंश से हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए''[14] (आयत 33क)। निश्चय ही यीशु के मन में आत्मिक स्वतन्त्रता थी–विशेषकर पाप के दोष और शक्ति से स्वतन्त्रता की (आयतें 34,[15] 36)।

उनका विचार था कि अब्राहम की शारीरिक सन्तान होना बहुत बड़ी बात है (आयतें 33, 39, 53, 56)। उन्हें यह समझ नहीं आई कि विश्वास के उस आदमी की सन्तान होना अधिक महत्वपूर्ण था (आयतें 37, 39; देखें रोमियों 2:28, 29)।

उन्होंने यह भी सोचा कि परमेश्वर उनका आत्मिक पिता है (आयत 41)। उन्हें यह पता नहीं चला कि यीशु को ठुकराकर वे अपने असली पिता अर्थात शैतान की इच्छा पूरी कर रहे हैं (आयतें 37, 38, 40, 41, 44[16])।

जब मसीह ने कहा कि उस पर विश्वास करने वाले मृत्यु को नहीं देखेंगे (आयत 51), तो अगुओं ने यही सोचा कि वह शारीरिक मृत्यु की बात कर रहा है (आयतें 52, 53)। परन्तु यीशु के मन में आत्मिक मृत्यु की बात थी कि जो लोग उसमें विश्वास करते हैं और उसके वचन मानते हैं, वे इस जीवन में परमेश्वर से अलग नहीं होंगे (आत्मिक मृत्यु, इफिसियों 2:1; 1 तीमुथियुस 5:6), न ही वे इस जीवन के बाद नरक (दूसरी मृत्यु; प्रकाशितवाक्य 20:14; 21:8) में जाएंगे।

जब मसीह ने अब्राहम के उसका दिन देखने और आनन्दित होने की बात की (आयत

56), तो उन्हें लगा कि वह बेकार की बात कर रहा है (आयत 57; देखें आयत 48,[17] 52; यूहन्ना 10:20)। निश्चय ही यीशु पूर्व-अस्तित्व का दावा कर रहा था (आयत 58; देखें यूहन्ना 1:1, 2, 14)।

मसीह की अधिकतर बातें उसके विरोधी नहीं समझते थे, परन्तु वे इस अवसर पर उसकी बातों का मूल महत्व समझते थे: ''मैं तुम से सच कहता हूं; कि पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं'' (यूहन्ना 8:58)। जब परमेश्वर ने मूसा से जलती हुई झाड़ी से बात की थी, तो मूसा ने उससे उसका नाम पूछा था। हम पढ़ते हैं, ''परमेश्वर ने मूसा से कहा, **मैं जो हूं सो हूं**। फिर उसने कहा, तू इस्राएलियों से यह कहना कि जिसका नाम **मैं हूं** है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है'' (निर्गमन 3:14)। जब यीशु ने कहा, ''पहले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ *मैं हूं*'' तो वह अपने लिए परमेश्वर के सबसे भयदायक नामों का इस्तेमाल कर रहा था।

सुनने वालों को मसीह के शब्दों का महत्व समझ आ गया, पर उनकी पूर्वधारणा ने उन्हें विश्वास करने की अनुमति नहीं दी। उनके अन्धेरे मनों में, यीशु परमेश्वर की निन्दा का दोषी था और मृत्यु-दण्ड के योग्य था (इस पद की तुलना यूहन्ना 10:31, 33 से करें)। ''तब उन्होंने उसे मारने के लिए पत्थर उठाए,[18] परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया'' (यूहन्ना 8:59)।[19] शायद वह भीड़ में से होकर चला गया और उसके मित्रों ने उसे घेर लिया। जो भी हो, एक बार फिर उसे परमेश्वर के पूर्व-प्रबन्ध से बचा लिया गया, ''क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया था'' (आयत 20)।

बहुत अन्तर करने के लिए, कई बार हम कहते हैं ''दिन रात का अन्तर है।'' यीशु और उसके समय के धार्मिक अधिकारियों में दिन-रात का अन्तर था। वही अन्तर आज भी प्रभु और किसी भी धार्मिक अगुवे में है, जो ''चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें'' कहता है (प्रेरितों 20:30)। बहकावे में न आएं। केवल मसीह और उसके प्रेरितों की शिक्षा को ही सुनें। किसी विकल्प को न मानें!

किसी दूसरे को प्रभु न मानें (यूहन्ना 9:1-41)

मन्दिर से निकलकर, ''जाते हुए यीशु ने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म से अन्धा था'' (आयत 1)। यह आदमी भिखारी था। भीख मांगने के पसन्दीदा स्थानों में से स्त्रियों के आंगन का मुख्य प्रवेश द्वार था (प्रेरितों 3:2), जहां मसीह उपदेश दे रहा था (यूहन्ना 8:20[20])। यानी अपनी जान बचाने के लिए भागते हुए भी अन्धे को चंगा करने का समय था (यूहन्ना 9:6, 7)।[21]

यह चंगाई सब्त के दिन हुई (आयत 14), जिससे सब्त का एक और विवाद खड़ा हो गया।[22] परन्तु इस बार आलोचना का शिकार यीशु नहीं, बल्कि चंगाई पाने वाला आदमी हुआ था।[23] अधिकारियों द्वारा उससे बेरहमी से पूछताछ की गई; परन्तु उसे आराधनालय में से निकालकर भी वे उसके विश्वास को हिला न सके। बाद में जब मसीह ने उससे भेंट कर अपने आप को उस पर प्रकट किया, तो ''उसने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं: और

उसे दण्डवत किया'' (आयत 38)।

यह मनोहर कहानी यूहन्ना द्वारा यीशु में विश्वास उत्पन्न करने के लिए लिखी गई थी (यूहन्ना 20:30, 31)। परन्तु यूहन्ना 9:39-41 की शृंखला यह स्पष्ट कर देती है कि एक और उद्देश्य, शारीरिक अन्धेपन और आत्मिक अन्धेपन में अन्तर करना था। यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करने से इनकार करने वालों को इसकी समझ नहीं आई, परन्तु वे आत्मिक रूप से अन्धे थे, जो अज्ञानता, पूर्वधारणा, और पाप के अंधकार में भटक रहे थे।

आज ''बहुत से ईश्वर'' (1 कुरिन्थियों 8:5) हमारी निष्ठा पाने के इच्छुक हैं, पर वास्तव में केवल एक ही सच्चा प्रभु है (इफिसियों 4:5)। बाकी सब ''अन्धे मार्ग दिखाने वाले हैं: और अन्धा यदि अन्धे को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड़हे में गिर पड़ेंगे'' (मत्ती 15:14)। किसी विकल्प को न मानें!

किसी और अगुवे को न मानें (यूहन्ना 10:1-21)

फरीसियों को उनके आत्मिक अन्धेपन के लिए यीशु की बातें (यूहन्ना 9:40, 41) अच्छा चरवाहा होने के उसके उपदेश के तुरन्त बाद कही गई थीं। 1 से 5 आयतों को आम तौर पर ''अच्छे चरवाहे का दृष्टांत'' के रूप में माना जाता है (देखें आयत 6)। जब तक हम मन में यह बात रखते हैं कि नये नियम में प्रयुक्त ''दृष्टांत'' शब्द के कई अलंकार हैं, तब तक यह माननीय है।[24] यूहन्ना ने ''दृष्टांत'' के लिए यूनानी शब्द (*parabole*) का इस्तेमाल नहीं किया, बल्कि उसने सामान्य शब्द (*paroimia*) का इस्तेमाल किया, जिसका अर्थ है, ''मार्ग के पास।'' इस शब्द का इस्तेमाल सामान्य ढंग के अलावा किसी और ढंग से प्रयुक्त भाषा के लिए है। या यूं कहें कि अलंकार की भाषा के लिए है।[25] NASB में आयत 6 में इस शब्द का अनुवाद ''figure of speech'' और NKJV में ''illustration'' किया गया है।

मसीह के उदाहरण को समझने के लिए, उसके समय की भेड़ों की देखभाल की व्याख्या ठीक रहेगी।[26] दिन के समय, भेड़ों को चरवाहों द्वारा खुली चरागाहों में चराया जाता था। रात के समय, भेड़ों को भेड़शाला में रखा जाता था।[27] यह भेड़शाला बिना छत की बाड़ होती थी, जिसका एक ही दरवाज़ा या फाटक होता था। इसकी दीवारें पत्थरों को चिनकर या कांटों वाली झाड़ियों से बनाई जाती थीं। कई बार कई-कई झुण्ड ''एक द्वारपाल'' की निगरानी में एक ही भेड़शाला में रखे जाते थे, जो दरवाज़ा बन्द कर देता था (यूहन्ना 10:3)। सुबह के समय ज़िम्मेदार व्यक्ति दरवाज़ा खोलकर भेड़ों को छोड़ देता था। हर चरवाहा आकर अपने झुण्ड को ले लेता था; हर भेड़ को अपने चरवाहे की आवाज़ की पहचान होती थी। आम तौर पर, चरवाहों को अपनी भेड़ों की भलाई की चिन्ता होती थी; परन्तु जैसा कि किसी भी काम में होता थे, ऐसे भी लोग होते हैं, जिनकी दिलचस्पी केवल भेड़ों के स्वामियों से वेतन लेने में होती थी।

यीशु ने अपने अनुयायियों के लिए अपने प्रेम और सम्भाल का जबर्दस्त सबक देने के लिए इन्हीं बातों का इस्तेमाल किया। उसने अपने और उन लोगों में अन्तर करने के लिए,

जो परमेश्वर के आत्मिक चरवाहे होने का दावा करते थे, भी इनका इस्तेमाल किया।[28]

परमेश्वर की ओर से स्वीकृत अगुआ

यूहन्ना 10 का उदाहरण असामान्य इस बात में है कि इसमें मसीह अपने आप को भेड़शाला का द्वार भी कहता है (आयतें 7, 9) और चरवाहा भी (आयतें 11, 14)। बेशक, वह दोनों ही है, बल्कि इससे भी बढ़कर है। एक अलंकार से समझाया नहीं जा सकता।

यीशु ने जब कहा कि ''द्वार मैं हूं'' (आयतें 7, 9), तो वह इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि पिता तक पहुंचने का एकमात्र मार्ग वही है (देखें यूहन्ना 14:6)। अन्दर-बाहर जाने का हवाला (10:9) यह कहने का अलंकारिक ढंग है कि सुरक्षा और सुरक्षित मार्ग (जिससे होकर भेड़ें भेड़शाला में जातीं) और स्वतन्त्रता और भरपूरी का एकमात्र मार्ग (जिसमें भेड़ें चरने के लिए जातीं) वही है।[29]

बहुत से लोगों को पवित्र शास्त्र का यह भाग अच्छा लगता है, क्योंकि इसमें यीशु को अच्छा चरवाहा के रूप में चित्रित किया गया है (आयतें 11, 14; देखें आयत 2)। चरवाहे के रूप में, मसीह अपनी भेड़ों को जानता है और वे उसे जानती हैं (आयत 14)। वह अपनी भेड़ों को ''सुखदायी जल के झरने के पास ले चलता'' और ''धर्म के मार्गों में'' (भजन संहिता 23:2, 3) उनकी अगुआई करता है (आयत 13)। उसकी भेड़ें उसकी आवाज़ पहचानतीं और उसके पीछे आती हैं (यूहन्ना 10:3, 4)। उसकी दिलचस्पी अपनी सुरक्षा नहीं बल्कि अपनी भेड़ों की देखभाल है (आयत 10[30])। वह उनकी रक्षा करता (जो आयत 12 में मिलता है) और उनके लिए मरने को भी तैयार है (आयतें 11, 17, 18)!

17 और 18 आयतों के सम्बन्ध में, जॉन फ्रैंक्लिन कार्टर ने लिखा है, ''बाइबल में और कहीं भी उसके मरने के लिए तैयार होने की बात या उस सामर्थ के पर्याप्त होने की बात जिससे वह फिर जीवित हो गया नहीं मिलती।''[31] आपको बाइबल की इन आयतों पर चिह्न लगा लेने चाहिए। मसीह के पकड़वाए जाने, पेशियों तथा मृत्यु का अध्ययन करते समय उन्हें मन में रखें। उसका क्रूसारोहण न्याय का अफ़सोसजनक असफल होना नहीं था, जिससे वह बच नहीं सकता था; यह तो अपनी भेड़ों के लिए स्वेच्छा से बलिदान होना था!

हमें आयत 16 में यीशु के शब्दों में आनन्दित होना चाहिए: ''मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं: मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा।'' ''और भी भेड़ें'' अन्य जातियों को यानी आप में से अधिकतर को जो इस पाठ का अध्ययन कर रहे हैं, कहा गया है! मसीह *सब* लोगों से प्रेम करता था, इसलिए उसने सब लोगों के लिए अपना जीवन दे दिया। वह संसार के सब लोगों का चरवाहा है!

अपनी ही सेवा करने वाले अगुवे

प्रभु का बलिदानपूर्वक स्वभाव अपने समय के अपनी सेवा करने वाले धार्मिक अगुओं से भिन्न है। उन्हें यहूदियों पर परमेश्वर के चरवाहे *होना चाहिए* था, परन्तु वे अपने

काम में बुरी तरह से नाकाम रहे (देखें यहेजकेल 34:1-6; यिर्मयाह 33:1-6; जकर्याह 11:4-11; मत्ती 9:36; मरकुस 6:34):

- परमेश्वर की इच्छा पूरी करने को उत्सुक चरवाहे होने के बजाय,[32] वे चोर और डाकू थे, जो भेड़शाला में किसी और मार्ग से प्रवेश करने की कोशिश कर रहे थे। उनकी दिलचस्पी केवल अपनी जेबें भरने में थी (यूहन्ना 10:1, 8)।
- भेड़ों को जानने वाले चरवाहे होने के बजाय उनमें उनकी दिलचस्पी स्वार्थ के लिए थी, वे उनके लिए पराये थे (यूहन्ना 10:5)।
- उनकी दिलचस्पी भेड़ों की रक्षा के लिए खतरे का सामना करने को तैयार चरवाहे होने के बजाय (देखें 1 शमूएल 17:34-37) अपनी ही सुरक्षा थी। वे ''मज़दूर'' मानसिकता वाले लोग थे;[33] उन्हें केवल अपनी मज़दूरी से मतलब था, न कि भेड़ों की भलाई से (यूहन्ना 10:11, 12)।

आज संसार में अपनी सेवा करने वाले धार्मिक अगुओं की भरमार है, जो अपने आस पास चापलूस लोगों के झुण्डों को इकट्ठा करने के लिए उत्सुक रहते हैं, जिनकी वे ऊन उतारते रहें। धोखा न खाएं। सच्चा चरवाहा, ''प्रधान चरवाहा'' (1 पतरस 5:4), ''अच्छा चरवाहा'' (यूहन्ना 10:11, 14) यीशु मसीह ही है।[34] कोई और विकल्प न मानें।

सारांश

हमें किसी और ज्योति को स्वीकार नहीं करना चाहिए। कोई भी और ''ज्योति'' केवल अन्धकार लाती है। हमें किसी और प्रभु को नहीं मानना चाहिए। कोई भी और ''प्रभु'' अपनी ही सेवा करने वाला है। हमें किसी और अगुवे को स्वीकार नहीं करना चाहिए। कोई भी और ''अगुवा'' हमें गुमराह ही करेगा। केवल यीशु की मानें। कोई और विकल्प न मानें!

वास्तव में जब मसीह ने ज्योति, प्रभु, अगुआ होने का दावा किया, तो उसके सुनने वाले लोगों में फूट पड़ गई थी (यूहन्ना 10:19)। किसी ने कहा, ''उस में दुष्टात्मा है और वह पागल है'' (यहन्ना 10:20), जबकि दूसरों ने कहा, ''ये बातें ऐसे मनुष्य की नहीं जिस में दुष्टात्मा हो: क्या दुष्टात्मा अन्धों की आंखें खोल सकती है?'' (यहन्ना 10:21)। हर किसी को स्वयं यह निर्णय लेना है कि वह यीशु को क्या समझता है। मेरी प्रार्थना है कि आप उसे *अपनी* ज्योति, *अपना* प्रभु और *अपना* अगुआ मानेंगे।

हम उसे अपनी ज्योति, प्रभु और अगुआ कैसे मानते हैं? जैसे भी शब्दों का इस्तेमाल किया जाए, शर्तें एक जैसी हैं:

- हमें उसकी सुनना आवश्यक है (यूहन्ना 10:3-5, 16)।
- हमें उसमें विश्वास लाना आवश्यक है (यूहन्ना 8:24; 9:38)।

- हमें उसके पीछे चलना (यूहन्ना 10:4; 8:12) और उसकी इच्छा को मानना आवश्यक है (यूहन्ना 8:31, 52)।[35]

किसी ने कहा है कि ''सबसे अच्छी भेड़ें वे नहीं हैं, जिन्हें पता है कि सबसे हरी चरागाह या सबसे दुष्ट लुटेरे कहां है। सबसे अच्छी भेड़ें वे हैं, जो यह जानती हैं कि उन्हें चरवाहे की कितनी आवश्यकता है।''[36] यदि आप जानते हैं कि आपको अच्छे चरवाहे की आवश्यकता है, तो आज ही उसके पास आएं और हर रोज़ उसके पीछे चलें!

नोट्स

यीशु के ''जगत की ज्योति'' के रूप में होने पर प्रवचन दिया जा सकता है (देखें जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैन्ट्री ऑन जॉन* [ऑस्टिन, टैक्सस, फर्म फ़ाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1974], 233-34)। यूहन्ना 9 पर एक प्रवचन इस पुस्तक में आगे मिलता है। मुझे ''अच्छा चरवाहा'' के रूप में यीशु पर प्रवचन शामिल करना पसन्द है, पर स्थान की कमी के कारण नहीं दे पाया।

इस बाइबल पाठ से प्रवचन के लिए अतिरिक्त विचार ये हैं: ''वास्तव में, वह कौन है?'' पर प्रवचन के लिए यूहन्ना 7:25, और 8:53 का इस्तेमाल करें। अपने सुनने वालों को चुनौती दें, ''*आपको* क्या लगता है कि यीशु कौन है?''

मुझे यूहन्ना 9:25 में भिखारी के शब्द अच्छे लगते हैं: ''... *मैं एक बात जानता हूं* कि मैं अन्धा था और अब देखता हूं।'' आप ''मैं एक बात जानता हूं'' पर विचार कर सकते हैं। हो सकता है कि हमें सब कुछ पता न हो, पर ये सच्चाइयां हम जानते हैं: परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, उसने अपने पुत्र को हमारे लिए मरने के लिए भेजा और ऐसी कई बातें-या यूं कहें कि जो हम जान सकते हैं, उस पर यह एक सरल सा संदेश है।

अच्छा चरवाहा पर भाग का इस्तेमाल ऐल्डरों के लिए प्रवचन ''चरवाहा होने का क्या अर्थ है'' के रूप में किया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]कुछ लोगों का मानना है कि यूहन्ना 9:1-10:21 समर्पण के पर्व (यूहन्ना 10:22) के समय ही घटा, जो कि सम्भव हो सकता है। परन्तु यूहन्ना 9 और डेरों के पर्व पर अध्यायों में गहरा सम्बन्ध (यूहन्ना 7:13 की तुलना यूहन्ना 9:22 से और यूहन्ना 8:12 की तुलना यूहन्ना 9:5 से करें); यूहन्ना 9:1-10:21 एक ही काल की निरन्तरता लगता है। निश्चय ही यूहन्ना 8:59 और यूहन्ना 9:1 के बीच किसी प्रकार का विराम है और सम्भव है कि यहूदिया की बाद की सेवकाई की कुछ घटनाएं इसमें मिला दी गई हैं। हम इस पर अगले पाठ में चर्चा करेंगे। [2]देखें यूहन्ना 6:35; 8:12, 58; 10:11; 11:25; 14:6; 15:1. [3]अच्छा चरवाहा के उदाहरण के सम्बन्ध में, यीशु ने यह भी कहा, ''द्वार मैं हूं'' (10:7, 9), जिसे ''मैं हूं'' कथनों की सूची में शामिल गया जा सकता है। [4]स्त्रियों का आंगन मन्दिर का वह भाग था, जिसमें यहूदी पुरुष और स्त्रियां दोनों जा सकते

थे। यह दिन में दो बार प्रार्थना करने के लिए विशेष स्थान था। [5]शमादान पर विस्तार से जानने के लिए ''जीवन का जल'' पाठ देखें। [6]एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 164-65. [7]द लिविंग बाइबल का अनुवाद देखें। यह एक अमेरिकी अभिव्यक्ति है। हो सकता है कि आपके यहां भी ऐसा ही कुछ कहते हों। [8]''प्रेरित'' शब्द का मूल अर्थ ''भेजा हुआ'' है। बारह लोग यीशु के प्रेरित थे। यीशु परमेश्वर का प्रेरित था। [9]उसके शत्रुओं ने उसे दोषी ठहराने का *यत्न किया,* परन्तु वे केवल सब्त का उल्लंघन करने पर बुड़बुड़ा ही सके। [10]यूहन्ना 8:24 का उल्लेख पिछले पाठ (''यरूशलेम को जाना'') में संक्षेप में किया गया था। यह आयत यह विश्वास करने पर कि यीशु ही मसीहा है, सामान्य कथन है, परन्तु अर्थ यह इससे भी बड़ा देती है। कई अनुवादों में वह के लिए ''He'' को इटैलिक [तिरछा] किया गया है। मूलत: मसीह ने कहा कि उन्हें यह विश्वास करना आवश्यक था कि वह ''मैं हूं'' अर्थात परमेश्वर हूं! (इस कथन की तुलना यूहन्ना 8:58 से करें।)

[11]कई लेखकों का सुझाव है कि आयत 30 के ''उस पर विश्वास किया'' और आयत 31 के ''उस पर विश्वास किया'' में अन्तर है। हो सकता है, परन्तु आयत 31 आयत 30 का ही फालोअप लगती है। यीशु स्पष्टतया अपने ऊपर विश्वास लाना आरम्भ करने वालों को यह समझाना चाहता था कि वास्तव में विश्वास किस बात पर करना है। [12]पवित्र शास्त्र के इस भाग में ''यहूदियों'' शब्द सामान्यतया यहूदी अगुओं के लिए है। [13]साधारणतया उद्धृत किया जाने वाला यह पद सामान्य सच्चाई पर लागू होता है। संदर्भ में, यह यीशु द्वारा कही गई आत्मिक सच्चाई के लिए है, विशेषकर इस बारे में सच्चाई कि वह कौन है और क्या करने के लिए आया था। इस सच्चाई ने उन्हें व्यवस्था के उत्पीड़न से और इससे जुड़ी सभी मानवीय परम्पराओं से स्वतन्त्र करना था। [14]यह दावा अजीब था क्योंकि इस्राएली बाबुल के और फारस के दास रह चुके थे। मसीह के जीवन काल में, यहूदी लोग रोम के अधीन थे। [15]पाप का दास होने के बारे में यीशु की बात नये नियम के अन्य भागों में भी मिलती है (रोमियों 6:16-18)। [16]बाइबल में यूहन्ना 8:44 शैतान और उसके काम के बारे में सबसे संक्षिप्त कथनों में से एक है। ''आरम्भ से हत्यारा'' सम्भवतया हव्वा को उसके पाप में बहकाने की बात है, जिससे संसार में शारीरिक मृत्यु आई। [17]यहूदियों का यीशु को ''सामरी'' कहना आवश्यक नहीं कि यह सुझाव दे रहा हो कि वह सामरिया में जन्मा और वहां पला-बढ़ा था, बल्कि यह शब्द एक अपमान था क्योंकि यहूदी लोग सामरियों से घृणा करते थे और उन्हें तुच्छ मानते थे। संसार के कई भागों में लोग किसी को अपमानित करने के लिए जिसे वे पसन्द न करते हों क्षेत्रीय शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। [18]उन्होंने मन्दिर के फर्श से पत्थर कैसे उठा लिए? कुछ विचार इस प्रकार हैं: (1) मन्दिर का सामान्य क्षेत्र लोगों और पशुओं से भरा रहता था। पहले, यीशु ने मन्दिर के फर्श पर भूमि पर लिखा था (यूहन्ना 8:6, 8)। इस फर्श पर कुछ न कुछ पड़ा रहता होगा, (2) हेरोदेस ने 20 ई.पू. में मन्दिर का पुन:निर्माण आरम्भ किया था और इस पर काम चल रहा था। निर्माण कार्य चलने वाली जगह पर कंकर पत्थरों का पड़ा रहना आम बात है, (3) हो सकता है कि अगुवे पूरी तैयारी के साथ आए हों और उनके हाथों और जेबों में पत्थर हों। [19]KJV में कुछ और शब्द जोड़े गए हैं, जो मूल हस्तलेखों में नहीं मिलते। जिनसे इस आयत का मूल अर्थ नहीं बदलता। [20]भण्डार स्त्रियों के आंगन का भाग था। (मन्दिर के क्षेत्र के बारे में इस पाठ में पहले दिए गए नोट्स पर विचार करें।)

[21]यह भी सम्भव है कि यह चंगाई यूहन्ना 8:59 की घटना के कुछ बाद में हुई। इस पाठ के अगले प्रवचन में हम अलग-अलग सम्भावनाओं का पता लगाएंगे। [22]पिछले विवाद मत्ती 12:1-14 और यूहन्ना 5:1-47 में मिल सकते हैं। [23]इस कहानी के विस्तृत अध्ययन के लिए, इस पुस्तक में आगे, ''मैं अन्धा था और अब देखता हूं'' पाठ देखें। [24]तकनीकी रूप से, यूहन्ना 10:1-5 एक रूपक है। दृष्टांत ''एक विस्तृत उपमा'' होता है (आमतौर पर तुलना के शब्द का इस्तेमाल करते हुए, जैसे ''की तरह'' या ''समान''), जबकि रूपक एक विस्तृत अलंकार होता है (एक तुलना जिसमें तुलना का कोई शब्द नहीं होता)। दृष्टांत में आम तौर पर केवल एक ही सच्चाई सिखाई जाती है, जबकि रूपक में आम तौर पर कई सच्चाइयां सिखाई जाती हैं। [25]यह शब्द यूहन्ना 16:25, 29 और 2 पतरस 2:22 में भी मिल सकता है। [26]आपके सुनने वाले भेड़ों की देखभाल से परिचित हो भी सकते हैं और नहीं भी। यदि वे परिचित हैं, तो आपके यहां भेड़ों की देखभाल के लिए किए जाने वाले यीशु के समय की देखभाल से अन्तरों पर ध्यान दें। [27]ऐसा हमेशा नहीं होता था। उदाहरण के लिए, वर्ष की बसन्त

ऋतु में जब घास हरी और खूब होती थी, तो झुंडों को ऊन उतारने और मांस के लिए रात भर खेतों में रख दिया जाता था (लूका 2:8)। अन्य समयों पर उन्हें रात के समय भेड़शाला में ही रखा जाता था।[28]एक बार फिर, कागज़ की कमी के कारण हमें मुख्य बातें बताने की अनुमति है। आप इस भाग को विस्तार दे सकते हैं।[29]सभी अलंकारों की तरह, ''में'' और ''बाहर'' शब्दों को सिरों से नहीं दबाना चाहिए; हम यीशु के प्रेम तथा देखभाल के ''अन्दर और बाहर'' नहीं जाते।[30]यूहन्ना 10:10 संसार में यीशु के आने के कारण सम्बन्धी महान कथनों में से एक है: वह हमें भरपूर जीवन दिलाने के लिए आया! इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें बहुतायत में धन या इस जीवन की अन्य *वस्तुएं* मिल जाएंगी। इसका अर्थ यह है कि जीने के लिए आवश्यक जीवन केवल मसीह में मिलने वाला जीवन ही है।

[31]जॉन फ्रैंक्लिन कार्टर, *ए लैमैंस हारमनी ऑफ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961) 210. [32]हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा एक (वास्तविक, परमेश्वर द्वारा स्वीकृत) द्वार से प्रवेश करने की है। [33]किसी दूसरे की भेड़ों की देखभाल के लिए भाड़े पर चरवाहे लिए जाते थे। इसके बावजूद, अधिकतर लोग भेड़ों की देखभाल दिल से करते थे। परन्तु कुछ लोग ''पैसे के लिए इसमें'' लगे थे और अपने सिर पर खतरा आते देख भाग जाते थे। यीशु ने कहा कि यहूदी पुरोहिततन्त्र ऐसा ही था। ''मजदूर'' शब्द से संकेत मिलता है कि उसे केवल भाड़े पर ही नहीं रखा जाता था बल्कि उसकी दिलचस्पी केवल अपनी मज़दूरी में होती थी। आज इसकी प्रासंगिकता बनाई जा सकती है: ऐल्डरों और प्रचारकों दोनों को उनके काम के लिए वेतन देना वचन के अनुसार है (लूका 10:7; 1 कुरिन्थियों 9:7-11; 1 तीमुथियुस 5:17, 18), परन्तु ऐल्डरों और प्रचारकों को अपना काम कभी भी ''पैसे *के लिए*'' नहीं करना चाहिए।[34]किसी मण्डली के ऐल्डर ''अधीन चरवाहे'' हैं (1 पतरस 5:1-4) जिनका काम झुण्ड की (प्रेरितों 20:28-31) अर्थात उस विशेष मण्डली की जिसकी ज़िम्मेदारी उन्हें सौंपी गई है, देखभाल करना है। वे प्रधान चरवाहे तथा उसके वचन के अधीन हैं। [35]यदि यहां उपयुक्त हो, तो आप इस पर विशेष निर्देश दे सकते हैं कि एक बाहरी पापी के लिए मन फिराकर और बपतिस्मा लेकर परमेश्वर की इच्छा पूरा करना (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38) और गलती करने वाले मसीही के लिए वापस आने के लिए (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 1:9) क्या करना आवश्यक है। [36]*द सैन्ट्रल कन्सर्न,* सैन्ट्रल चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, क्लेबर्न, टैक्सस (20 अप्रैल 2000): 2 के साप्ताहिक बुलेटन में उद्धृत, पॉल ब्राउनलो, *ए शैफर्ड'स हार्ट*।